International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

भारत के जनजातीय समाज में श्री राम के प्रति आस्था का 2014 के लोकसभा चुनाव पर प्रभाव

डॉ. राकेश कुमार जायसवाल

असिस्टेंट प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महाविद्यालय, बदायूँ, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

भारत का जनजातीय समाज अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक परंपराओं, धार्मिक मान्यताओं, लोककथाओं, प्रकृति-आधारित जीवनदृष्टि और सामुदायिक संगठन के कारण भारतीय सामाजिक संरचना का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण घटक है। ऐतिहासिक रूप से जनजातीय समुदायों की धार्मिक पहचान को अक्सर प्रकृति-पूजा, पूर्वज-पूजा, टोटेमवाद, स्थानीय देवताओं और विशिष्ट लोकविश्वासों से जोड़ा गया है। फिर भी भारत की दीर्घकालिक सांस्कृतिक प्रक्रियाओं में जनजातीय समाज और व्यापक हिंदू सांस्कृतिक परंपरा के बीच विभिन्न स्तरों पर संपर्क, आदान-प्रदान, समन्वय और पुनर्व्याख्या होती रही है। इसी परिप्रेक्ष्य में श्री राम, रामकथा, रामायण, शबरी, निषादराज, वनवास और वनांचल से जुड़े प्रसंग जनजातीय समुदायों और राम की सांस्कृतिक छवि के बीच संबंध स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण रहे हैं। बीसवीं और इक्कीसवीं सदी में यह सांस्कृतिक संबंध केवल धार्मिक आख्यान तक सीमित नहीं रहा, बल्कि पहचान-राजनीति, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, धार्मिक लामबंदी और चुनावी रणनीतियों में भी प्रयुक्त होने लगा। 2014 का लोकसभा चुनाव भारतीय राजनीति में एक निर्णायक मोड़ के रूप में सामने आया। इस चुनाव में विकास, भ्रष्टाचार-विरोध, सशक्त नेतृत्व और परिवर्तन की आकांक्षा जैसे मुद्दे अत्यंत प्रमुख थे। इसके साथ ही सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और व्यापक हिंदू पहचान का विमर्श भी अप्रत्यक्ष रूप से सक्रिय था। यद्यपि राम मंदिर का प्रश्न 2014 के चुनावी घोषणापत्र और प्रचार के केंद्र में उतनी प्रत्यक्षता से नहीं था जितना बाद के वर्षों में दिखाई दिया, फिर भी श्री राम की सांस्कृतिक उपस्थिति और राम से जुड़ी प्रतीकात्मक राजनीति ने अनेक क्षेत्रों में भावनात्मक और सांस्कृतिक वातावरण को प्रभावित किया। जनजातीय बहुल क्षेत्रों में यह प्रभाव विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण था, क्योंकि वहाँ सांस्कृतिक समावेशन, धार्मिक पुनर्परिभाषा और राजनीतिक लामबंदी की प्रक्रियाएँ पहले से सक्रिय थीं। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि भारत के जनजातीय समाज में श्री राम के प्रति आस्था ने 2014 के लोकसभा चुनावों में किस सीमा तक और किस प्रकार मतदान व्यवहार को प्रभावित किया। अध्ययन का केंद्रीय निष्कर्ष यह है कि जनजातीय समाज में श्री राम के प्रति आस्था ने चुनावों को प्रत्यक्ष रूप से निर्णायक रूप में नियंत्रित नहीं किया, किंतु उसने सांस्कृतिक पहचान के निर्माण, राजनीतिक स्वीकार्यता के विस्तार, हिंदू प्रतीकात्मक एकता के संदेश और कुछ क्षेत्रों में भाजपा के सामाजिक विस्तार के लिए एक सहायक वैचारिक-सांस्कृतिक आधार अवश्य प्रदान किया। यह प्रभाव एक समान, सर्वव्यापी या एकरेखीय नहीं था; बल्कि राज्यवार, क्षेत्रवार और समुदायवार भिन्न रूपों में प्रकट हुआ। इसलिए 2014 के चुनाव में जनजातीय मतदान को केवल धार्मिक आस्था से समझना उचित नहीं होगा; विकास, नेतृत्व, कल्याण, स्थानीय मुद्दे, क्षेत्रीय राजनीति और संगठनात्मक कार्य भी समान रूप से महत्वपूर्ण थे। फिर भी यह अध्ययन दर्शाता है कि श्री राम का सांस्कृतिक प्रतीक जनजातीय समाज और चुनावी राजनीति के बीच एक महत्त्वपूर्ण सेतु के रूप में कार्य करता रहा।

मुख्य शब्द: जनजातीय समाज, श्री राम, लोकसभा चुनाव 2014, मतदान व्यवहार, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, आदिवासी राजनीति, शबरी, पहचान-राजनीति

1. प्रस्तावना

भारतीय लोकतंत्र में चुनावी व्यवहार को समझने के लिए केवल राजनीतिक दलों, नेताओं और घोषणापत्रों का अध्ययन पर्याप्त नहीं है। भारत जैसे बहुलतावादी समाज में मतदान व्यवहार सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक पहचान, धार्मिक प्रतीकों, ऐतिहासिक स्मृतियों, आर्थिक आकांक्षाओं और स्थानीय राजनीतिक प्रक्रियाओं से गहराई से प्रभावित होता है। जनजातीय समाज के संदर्भ में यह जटिलता और भी अधिक बढ़ जाती है, क्योंकि जनजातीय समुदायों की पहचान केवल प्रशासनिक श्रेणी या चुनावी संख्या तक सीमित नहीं है; वे विशिष्ट सांस्कृतिक इतिहास, धार्मिक परंपराओं, क्षेत्रीय अनुभवों और राजनीतिक उपेक्षा की अलग-अलग स्मृतियों से निर्मित होते हैं।

भारत की कुल जनसंख्या में अनुसूचित जनजातियों की हिस्सेदारी लगभग 8.6 प्रतिशत है। यह प्रतिशत भले राष्ट्रीय स्तर पर सीमित प्रतीत हो, किंतु अनेक राज्यों और संसदीय निर्वाचन क्षेत्रों में जनजातीय मतदाता निर्णायक भूमिका निभाते हैं। झारखंड, छत्तीसगढ़, ओडिशा, गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, असम और उत्तर-पूर्व के अनेक राज्यों में जनजातीय समाज का राजनीतिक महत्व अत्यंत अधिक है। इस कारण राष्ट्रीय दलों और क्षेत्रीय शक्तियों, दोनों ने समय-समय पर जनजातीय समाज के बीच अपनी पैठ बनाने का प्रयास किया है।

जनजातीय समुदायों की धार्मिक पहचान के संबंध में लंबे समय से विमर्श चलता रहा है। कुछ विद्वान उन्हें मुख्यतः प्रकृति-पूजक और पृथक सांस्कृतिक इकाई मानते हैं, जबकि अन्य विद्वान भारतीय सभ्यता के व्यापक ढाँचे में उनकी सांस्कृतिक अंतःक्रियाओं को रेखांकित करते हैं। वस्तुतः जनजातीय समाज और व्यापक हिंदू परंपरा के बीच संबंध एकरेखीय नहीं, बल्कि जटिल और बहुस्तरीय रहे हैं। अनेक क्षेत्रों में स्थानीय देवी-देवताओं, लोकनायकों और पौराणिक पात्रों के बीच समन्वय स्थापित हुआ है। इसी संदर्भ में रामायण और श्री राम से जुड़े प्रसंग, विशेषकर शबरी, निषादराज, वनवासी संपर्क और वन-आधारित कथाएँ, जनजातीय समाज और राम की छवि के बीच सेतु का कार्य करती हैं।

भगवान श्री राम का भारतीय सांस्कृतिक मानस में स्थान केवल धार्मिक नहीं, बल्कि नैतिक, राजनीतिक और सभ्यतागत भी है। वे आदर्श पुत्र, आदर्श राजा, मर्यादा पुरुषोत्तम, धर्मरक्षक और लोकनायक के रूप में प्रतिष्ठित हैं। जनजातीय विमर्श में श्री राम के वनवास का प्रसंग विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इसी कालखंड में उनका संपर्क वनांचलों, वनवासी समूहों, शबरी, निषादराज और अन्य वन-समाजों से दर्शाया जाता है। इस प्रकार रामकथा में जनजातीय समाज को केवल परिधीय पात्र के रूप में नहीं, बल्कि राम के संघर्ष और विजय-यात्रा के सहभागी के रूप में भी प्रस्तुत किया गया है। यही सांस्कृतिक तत्व आधुनिक समय में जनजातीय समाज के हिंदू सांस्कृतिक एकीकरण की राजनीति का आधार बना।

2014 का लोकसभा चुनाव इस संदर्भ में विशेष महत्त्व रखता है। यह चुनाव केवल सरकार परिवर्तन का अवसर नहीं था; यह भारतीय राजनीति में नेतृत्व, विकास, भ्रष्टाचार-विरोध और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के नए समागम का क्षण भी था। भारतीय जनता पार्टी ने नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में स्वयं को विकास, निर्णायक शासन और राष्ट्रीय गौरव की पार्टी के रूप में प्रस्तुत किया। यद्यपि चुनावी प्रचार में राम मंदिर मुद्दा केंद्रीय रूप से प्रमुख नहीं था, फिर भी सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के व्यापक विमर्श में राम की छवि, हिंदू सांस्कृतिक प्रतीकों का प्रयोग, और जनजातीय क्षेत्रों में सांस्कृतिक संपर्क की राजनीति ने अप्रत्यक्ष भूमिका निभाई।

यह शोध-पत्र इसी प्रश्न की पड़ताल करता है कि जनजातीय समाज में श्री राम के प्रति आस्था ने 2014 के लोकसभा चुनाव में किस प्रकार चुनावी व्यवहार को प्रभावित किया। क्या यह प्रभाव प्रत्यक्ष था? क्या यह केवल सांस्कृतिक था या राजनीतिक भी? क्या सभी जनजातीय क्षेत्रों में इसका असर समान था? और क्या यह विकास, नेतृत्व तथा स्थानीय मुद्दों की तुलना में अधिक या कम प्रभावी था? इन प्रश्नों का उत्तर भारतीय चुनावी राजनीति, जनजातीय अध्ययन और सांस्कृतिक प्रतीकवाद के अंतर्संबंधों को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

2. अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध-पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. पहला, भारत के जनजातीय society में श्री राम से जुड़े सांस्कृतिक और धार्मिक संदर्भों का विश्लेषण करना।
2. दूसरा, 2014 के लोकसभा चुनाव के प्रमुख राजनीतिक और वैचारिक मुद्दों का अध्ययन करना।
3. तीसरा, यह परीक्षण करना कि जनजातीय समाज में श्री राम के प्रति आस्था ने किस प्रकार राजनीतिक पहचान और मतदान व्यवहार को प्रभावित किया।
4. चौथा, जनजातीय बहुल राज्यों में भाजपा के सामाजिक विस्तार और चुनावी सफलता के संदर्भ में सांस्कृतिक प्रतीकों की भूमिका का मूल्यांकन करना।
5. पाँचवाँ, यह स्पष्ट करना कि विकास, नेतृत्व, स्थानीय मुद्दे, कल्याण और सांस्कृतिक आस्था के बीच चुनावी व्यवहार में किस प्रकार अंतःक्रिया हुई।
6.

3. शोध पद्धति

यह अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। इसमें समाचार-पत्रों, समकालीन विश्लेषणों, चुनाव परिणामों, विद्वतापूर्ण लेखों, राजनीतिक टिप्पणियों, जनजातीय समाज पर उपलब्ध शोध, सांस्कृतिक अध्ययनों और नीति-विश्लेषणों का उपयोग किया गया है। शोध की प्रकृति वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक और व्याख्यात्मक है। इस शोध में पहले जनजातीय समाज और श्री राम के सांस्कृतिक संबंधों की ऐतिहासिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि प्रस्तुत की गई है। इसके बाद 2014 के लोकसभा चुनाव के राष्ट्रीय संदर्भ की समीक्षा की गई है। फिर जनजातीय बहुल क्षेत्रों में चुनावी रुझानों और सांस्कृतिक लामबंदी के पैटर्न का विश्लेषण किया गया है। अंततः एक समालोचनात्मक दृष्टि से यह विवेचना की गई है कि श्री राम के प्रति आस्था चुनावी राजनीति में किस सीमा तक प्रभावी कारक बनी। इस अध्ययन की सीमा यह है कि यह सभी जनजातीय समुदायों में क्षेत्रीय स्तर पर किए गए प्रत्यक्ष मैदानी सर्वेक्षण पर आधारित नहीं है। भारत का जनजातीय समाज अत्यंत विविध है और सभी समुदायों में श्री राम के प्रति आस्था का स्वरूप समान नहीं है। अतः निष्कर्षों को व्यापक सामान्यीकरण के बजाय प्रवृत्तिगत विश्लेषण के रूप में देखा जाना चाहिए।

4. जनजातीय समाज और श्री राम का सांस्कृतिक संदर्भ

4.1 जनजातीय समाज की सांस्कृतिक विशेषताएँ

भारत का जनजातीय समाज किसी एक समान धार्मिक-सांस्कृतिक इकाई का नाम नहीं है। विभिन्न जनजातीय समुदायों की अपनी-अपनी भाषाएँ, लोकदेवता, मिथक, अनुष्ठान, पारिवारिक संरचनाएँ, कृषि-पद्धतियाँ और उत्सव हैं। संथाल, भील, गोंड, मुंडा, हो, उराँव, खासी, गारो, बोडो, मिजो, नागा, भीटो, कोरकू, सहरिया, डोंगरिया कोंध, बैगा आदि समुदायों की सांस्कृतिक संरचनाएँ एक-दूसरे से भिन्न हैं। अतः जनजातीय समाज को एकरूप धार्मिक इकाई मानना न तो समाजशास्त्रीय रूप से उचित है और न राजनीतिक रूप से।

फिर भी यह भी उतना ही सत्य है कि भारतीय सांस्कृतिक इतिहास में अनेक जनजातीय समुदायों और व्यापक हिंदू धार्मिक-सांस्कृतिक परंपरा के बीच परस्पर प्रभाव की प्रक्रियाएँ चली हैं। स्थानीय मेलों, लोककथाओं, क्षेत्रीय मंदिरों, रामलीला, दशहरा, लोकदेवताओं के पुनर्स्थापन और धार्मिक यात्राओं ने इस संपर्क को बढ़ाया। कई क्षेत्रों में जनजातीय देवी-देवताओं का पुनर्पाठ हिंदू पौराणिक ढाँचे के भीतर किया गया, जबकि कहीं-कहीं हिंदू आख्यानों को जनजातीय स्मृतियों के अनुरूप स्थानीय रूप दिया गया।

4.2 रामायण और जनजातीय जुड़ाव

रामायण भारतीय सांस्कृतिक स्मृति का अत्यंत व्यापक आख्यान है। इस महाकाव्य में वन, वनवास, तपोभूमि, जनजातीय समाज, वन-समुदाय और सीमांत क्षेत्रों की उपस्थिति केंद्रीय रूप से मौजूद है। विशेष रूप से शबरी का प्रसंग जनजातीय समाज और श्री राम के बीच भावनात्मक संबंध का सबसे चर्चित उदाहरण है। शबरी को एक ऐसी भक्ति-परंपरा के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया है जिसमें जाति, सामाजिक स्थिति और औपचारिक धार्मिक अधिकार गौण हो जाते हैं, और प्रेम, समर्पण तथा भक्ति को सर्वोच्च स्थान मिलता है। शबरी द्वारा राम को बेर खिलाने

की कथा जनजातीय समाज को सम्मान, निकटता और आध्यात्मिक मान्यता प्रदान करने वाली कथा के रूप में लंबे समय से प्रयुक्त होती रही है।
इसी प्रकार निषादराज गुह का प्रसंग भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। राम के वनगमन के समय निषादराज की भूमिका यह संकेत करती है कि वन-समाज राम के संघर्ष में सहभागी थे। अनेक सांस्कृतिक और राजनीतिक व्याख्याओं में इन प्रसंगों का उपयोग यह दर्शाने के लिए किया गया कि राम केवल राजमहलों के देवता नहीं, बल्कि वनवासी, वंचित और सीमांत समुदायों के भी आराध्य हैं।

4.3 वनवास, वनांचल और सांस्कृतिक निकटता

राम के चौदह वर्ष के वनवास का आख्यान जनजातीय समाज के लिए विशेष सांस्कृतिक अर्थ रखता है। वनवास की यात्रा के दौरान राम, सीता और लक्ष्मण का संपर्क वनांचल के विभिन्न पात्रों और समुदायों से दर्शाया गया है। इस कारण अनेक जनजातीय बहुल क्षेत्रों में यह सांस्कृतिक व्याख्या विकसित की गई कि राम और वनवासी समाज के बीच ऐतिहासिक-आध्यात्मिक संबंध है। आधुनिक संगठनों और सांस्कृतिक अभियानों ने इस धारणा को और अधिक बल दिया।
यहाँ यह समझना आवश्यक है कि यह संबंध शुद्ध ऐतिहासिक दस्तावेज़ी सत्य के रूप में नहीं, बल्कि सांस्कृतिक स्मृति और धार्मिक-राजनीतिक प्रतीक के रूप में कार्य करता है। चुनावी राजनीति में ऐसे प्रतीकात्मक आख्यान अक्सर तथ्य की अपेक्षा भावनात्मक और सामूहिक पहचान के स्तर पर अधिक प्रभावी होते हैं।

4.4 सांस्कृतिक एकीकरण और लोक-उत्सव

विजयादशमी, रामलीला, रामकथा, कथा-वाचन, धार्मिक यात्राएँ और लोक-उत्सव भारत के अनेक जनजातीय क्षेत्रों में धीरे-धीरे लोक-संस्कृति का हिस्सा बने। कई स्थानों पर यह सांस्कृतिक समावेशन स्वाभाविक सामाजिक संपर्क के माध्यम से हुआ, जबकि कई स्थानों पर सामाजिक-सांस्कृतिक संगठनों, धार्मिक आंदोलनों और राजनीतिक कार्यकर्ताओं ने इसे बढ़ावा दिया। परिणामस्वरूप श्री राम की छवि कुछ जनजातीय समुदायों में केवल धार्मिक प्रतीक न रहकर व्यापक सांस्कृतिक पहचान के वाहक के रूप में उभरी।

4.5 राजनीतिक उपयोग और प्रतीक-निर्माण

समकालीन भारतीय राजनीति में राम का प्रयोग केवल धार्मिक आराध्य के रूप में नहीं, बल्कि सांस्कृतिक एकता, राष्ट्रीय गौरव और सभ्यतागत पहचान के प्रतीक के रूप में भी किया गया है। जनजातीय क्षेत्रों में "शबरी की परंपरा", "वनवासी रामभक्त", "राम और वनांचल" जैसे सांस्कृतिक संकेतों का उपयोग करके जनजातीय समाज को व्यापक हिंदू पहचान से जोड़ने का प्रयास हुआ। यह प्रयास चुनावी राजनीति में विशेष रूप से इसलिए महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि वह सामाजिक दूरी को कम करने, पहचान को पुनर्परिभाषित करने और नए मतदाता समूहों को वैचारिक रूप से जोड़ने में सहायक हो सकता है।

5. 2014 का लोकसभा चुनाव: प्रमुख मुद्दे और राजनीतिक वातावरण

2014 का लोकसभा चुनाव स्वतंत्र भारत के चुनावी इतिहास के सबसे निर्णायक चुनावों में से एक था। यह चुनाव उस समय हुआ जब संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन की सरकार भ्रष्टाचार, नीतिगत जड़ता, आर्थिक मंदी और नेतृत्व की कमजोरी के आरोपों से घिरी हुई थी। भारतीय जनता पार्टी ने नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री पद का प्रत्याशी बनाकर चुनाव को नेतृत्व-केंद्रित बना दिया। "अच्छे दिन", विकास, सुशासन, निर्णायक नेतृत्व और भ्रष्टाचार-मुक्त शासन जैसे मुद्दे चुनाव प्रचार के केंद्र में रहे।
फिर भी यह चुनाव केवल विकास का चुनाव नहीं था। इसके भीतर सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय पहचान, बहुसंख्यक आत्मविश्वास और राजनीतिक परिवर्तन की भावनाएँ भी अंतर्निहित थीं। भाजपा का चुनावी संदेश कई स्तरों पर काम कर रहा था—एक स्तर पर वह विकास और शासन की बात कर रहा था; दूसरे स्तर पर वह कांग्रेस-विरोधी असंतोष को संगठित कर रहा था; और तीसरे स्तर पर वह सांस्कृतिक-सभ्यतागत आत्मसम्मान की भावना को जागृत कर रहा था।

राम मंदिर का मुद्दा 2014 में उतना प्रमुख औपचारिक चुनावी मुद्दा नहीं था जितना 1990 के दशक में या बाद के कुछ वर्षों में दिखाई दिया। फिर भी राम की छवि, हिंदू सांस्कृतिक एकता और धार्मिक प्रतीकों का भावनात्मक प्रभाव पृष्ठभूमि में मौजूद था। यह प्रभाव विशेष रूप से उन क्षेत्रों में महत्वपूर्ण था जहाँ सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और स्थानीय धार्मिक संपर्क पहले से सक्रिय थे। जनजातीय क्षेत्रों में यह विमर्श राम को सीधे मंदिर-राजनीति के रूप में नहीं, बल्कि सांस्कृतिक निकटता और पहचान के रूप में सामने ला सकता था। इस चुनाव में मीडिया, सोशल मीडिया, विशाल जनसभाओं और प्रतीकात्मक संदेशों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नरेंद्र मोदी की छवि केवल विकास पुरुष के रूप में ही नहीं, बल्कि ऐसे नेता के रूप में भी प्रस्तुत की गई जो भारत की सभ्यतागत अस्मिता का प्रतिनिधित्व कर सकता है। इस व्यापक भाव-परिदृश्य में श्री राम जैसे सांस्कृतिक प्रतीकों का अप्रत्यक्ष प्रभाव समझा जाना चाहिए।

6. जनजातीय वोट और राजनीतिक परिवर्तन

6.1 जनजातीय वोट का चुनावी महत्व

भारत के अनेक संसदीय निर्वाचन क्षेत्रों में जनजातीय मतदाता निर्णायक प्रभाव रखते हैं। अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित सीटों के अतिरिक्त भी कई सामान्य सीटों पर जनजातीय मतों का अनुपात इतना अधिक होता है कि वे चुनावी परिणामों को प्रभावित कर सकते हैं। झारखंड, छत्तीसगढ़, ओडिशा, मध्य प्रदेश, गुजरात, राजस्थान और असम जैसे राज्यों में जनजातीय समाज राजनीतिक दलों के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण मतदाता समूह है। जनजातीय वोट का महत्व केवल संख्या के कारण नहीं है, बल्कि इसलिए भी है कि यह मतदाता समूह लंबे समय तक मुख्यधारा दलों की उपेक्षा, विकास-अभाव, विस्थापन, वनाधिकार, शिक्षा, स्वास्थ्य और पहचान-संकट जैसी समस्याओं से जूझता रहा है। इसलिए जो दल जनजातीय समाज के साथ वैचारिक या सांस्कृतिक संपर्क स्थापित कर पाता है, वह चुनावी रूप से लाभान्वित हो सकता है।

6.2 2014 में राजनीतिक परिवर्तन

2014 के चुनाव में कई जनजातीय बहुल क्षेत्रों में भाजपा ने अपने प्रभाव का विस्तार किया। यह परिवर्तन हर राज्य में समान नहीं था, किंतु एक व्यापक प्रवृत्ति के रूप में देखा जा सकता है। भाजपा पारंपरिक रूप से शहरी, मध्यवर्गीय और उच्चवर्णीय समर्थन से जुड़ी मानी जाती थी, किंतु 2014 तक आते-आते उसने पिछड़े, दलित और जनजातीय समाज के बीच भी अपनी पहुँच बढ़ाने का संगठित प्रयास किया।

झारखंड और छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में भाजपा की उपस्थिति पहले से थी, पर 2014 में इस उपस्थिति को अधिक व्यापक सामाजिक स्वीकृति मिली। असम में भी कुछ जनजातीय समूहों का समर्थन भाजपा के पक्ष में गया। इसका कारण केवल धार्मिक प्रतीक नहीं थे; स्थानीय अस्मिता, अवैध घुसपैठ का प्रश्न, विकास, संगठनात्मक कार्य और कांग्रेस-विरोधी भावना भी महत्त्वपूर्ण थे। फिर भी सांस्कृतिक संपर्क और हिंदू पहचान का व्यापक विमर्श इस विस्तार में सहायक कारक के रूप में देखा जा सकता है।

6.3 जनजातीय क्षेत्रों में संगठनात्मक कार्य

जनजातीय समाज में चुनावी समर्थन केवल प्रचार से नहीं आता। इसके लिए दीर्घकालिक सामाजिक-सांस्कृतिक कार्य, शिक्षा-संस्थाएँ, सेवा-कार्य, धार्मिक-सांस्कृतिक आयोजन, स्थानीय नेतृत्व निर्माण और समुदाय-विशिष्ट संवाद आवश्यक होता है। कई क्षेत्रों में इस प्रकार के कार्यों ने जनजातीय समाज और व्यापक हिंदू सांस्कृतिक प्रतीकों के बीच संबंध को मजबूत किया। 2014 के चुनाव तक आते-आते यह आधार कुछ क्षेत्रों में राजनीतिक लाभ में परिवर्तित होता दिखाई दिया।

7. श्री राम के प्रति आस्था का चुनावी राजनीति पर प्रभाव

7.1 पहचान राजनीति और सांस्कृतिक प्रतीक

चुनावी राजनीति में धार्मिक और सांस्कृतिक प्रतीक अत्यंत शक्तिशाली उपकरण होते हैं, क्योंकि वे केवल आस्था नहीं जगाते, बल्कि सामूहिक पहचान, ऐतिहासिक गौरव और राजनीतिक आत्मबोध की भावना भी उत्पन्न करते हैं। श्री राम भारतीय सांस्कृतिक चेतना में एक व्यापक और स्वीकार्य प्रतीक हैं। जब उन्हें राष्ट्रीय सांस्कृतिक प्रतीक के रूप में

प्रस्तुत किया जाता है, तब उनका प्रभाव केवल धार्मिक नहीं रहता; वह सभ्यतागत और राजनीतिक भी हो जाता है। जनजातीय समाज के संदर्भ में "राम भक्त शबरी" जैसी कथाएँ इस प्रतीकात्मक प्रक्रिया को और अधिक प्रभावी बनाती हैं। इससे यह संदेश निर्मित किया जाता है कि जनजातीय समाज भारतीय सांस्कृतिक परंपरा का बाहरी या पृथक हिस्सा नहीं, बल्कि उसका अभिन्न अंग है। यह सांस्कृतिक संदेश चुनावी राजनीति में मतदाता को व्यापक पहचान-समूह से जोड़ सकता है।

7.2 धार्मिक-सांस्कृतिक लामबंदी

2014 में प्रत्यक्ष रूप से राम मंदिर आंदोलन चुनावी प्रचार के केंद्र में नहीं था, फिर भी धार्मिक-सांस्कृतिक लामबंदी की प्रक्रिया पृष्ठभूमि में सक्रिय थी। जनजातीय क्षेत्रों में स्थानीय धार्मिक सभाएँ, कथा-प्रसंग, सांस्कृतिक यात्राएँ, उत्सव और हिंदू सांस्कृतिक अभियानों के माध्यम से एक प्रकार का सांस्कृतिक वातावरण निर्मित किया गया, जिसमें श्री राम की छवि "हमारी साझा परंपरा" के रूप में स्थापित हो सके। यह प्रभाव प्रत्यक्ष मतदान-अनुदेश के रूप में नहीं, बल्कि मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक स्वीकृति के रूप में कार्य करता है। जब कोई समुदाय स्वयं को किसी बड़े सांस्कृतिक समुदाय का हिस्सा अनुभव करने लगता है, तो उसकी राजनीतिक पसंद भी प्रभावित हो सकती है। यही कारण है कि श्री राम के प्रति आस्था को 2014 के चुनाव में प्रत्यक्ष नहीं, बल्कि अप्रत्यक्ष चुनावी कारक के रूप में देखना अधिक उचित है।

7.3 प्रतीकात्मक राजनीति और नेतृत्व

श्री राम को आदर्श राजा, धर्म के रक्षक और न्यायपूर्ण शासन के प्रतीक के रूप में देखा जाता है। चुनावी राजनीति में जब नेतृत्व को निर्णायक, नैतिक, राष्ट्रवादी और लोकहितैषी के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, तब कई बार सांस्कृतिक स्मृतियों में निहित आदर्श-राजा की छवि अप्रत्यक्ष रूप से सक्रिय होती है। 2014 में नरेंद्र मोदी की छवि एक मजबूत और परिवर्तनकारी नेता के रूप में प्रस्तुत की गई। यद्यपि उन्हें प्रत्यक्ष रूप से राम के साथ नहीं जोड़ा गया, फिर भी व्यापक सांस्कृतिक राष्ट्रवादी वातावरण में इस प्रकार का प्रतीकात्मक संबंध मतदाता के मानस में उभर सकता था।

7.4 जनजातीय समाज में राम की स्वीकृति का विविध स्वरूप

यह मान लेना गलत होगा कि सभी जनजातीय समुदायों में श्री राम के प्रति आस्था समान स्तर पर मौजूद थी। कुछ क्षेत्रों में रामकथा और हिंदू सांस्कृतिक परंपरा का प्रभाव अधिक था; कुछ क्षेत्रों में ईसाई मिशनरी प्रभाव, स्थानीय धार्मिक परंपरा या पृथक आदिवासी धार्मिक पहचान अधिक मजबूत थी। इसलिए चुनावी प्रभाव भी भिन्न-भिन्न रहा। जहाँ सांस्कृतिक समावेशन का कार्य पूर्व से चल रहा था, वहाँ राम का प्रतीक अधिक प्रभावी हो सकता था; जहाँ स्थानीय पहचान अधिक पृथक थी, वहाँ इसका प्रभाव सीमित रहा।

8. सीमाएँ और अन्य प्रभावी कारक

यदि यह कहा जाए कि 2014 के लोकसभा चुनाव में जनजातीय समाज का मतदान केवल श्री राम के प्रति आस्था से निर्धारित हुआ, तो यह एक अतिरंजित और भ्रामक निष्कर्ष होगा। चुनावी व्यवहार सदैव बहु-कारक होता है, और जनजातीय क्षेत्रों में यह बात और भी अधिक सत्य है।

1. पहला महत्त्वपूर्ण कारक विकास था। सड़क, बिजली, पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य, संचार, रोजगार और बुनियादी ढाँचे की कमी जनजातीय क्षेत्रों की प्रमुख समस्याएँ रही हैं। जो दल विकास और परिवर्तन का विश्वसनीय वादा करने में सफल हुआ, उसे जनजातीय समर्थन मिलने की संभावना बढ़ी।
2. दूसरा कारक नेतृत्व था। नरेंद्र मोदी की छवि एक निर्णायक, ऊर्जावान और सशक्त नेता की थी। अनेक मतदाताओं ने जाति, क्षेत्र और स्थानीय सीमाओं से ऊपर उठकर नेतृत्व में विश्वास के आधार पर मतदान किया। जनजातीय मतदाता भी इससे पूर्णतः अलग नहीं थे।
3. तीसरा कारक स्थानीय मुद्दे थे। वनाधिकार, भूमि-अधिग्रहण, विस्थापन, खनन, रोजगार, सुरक्षा, नक्सलवाद, प्रशासनिक उपेक्षा और स्थानीय नेतृत्व की भूमिका अनेक जनजातीय क्षेत्रों में अत्यंत महत्वपूर्ण रहे। किसी क्षेत्र में यदि

स्थानीय उम्मीदवार या पार्टी इन प्रश्नों को प्रभावी रूप से उठाती थी, तो सांस्कृतिक प्रतीकों का प्रभाव गौण हो सकता था।

4. चौथा कारक कल्याण और संगठनात्मक उपस्थिति था। यदि किसी दल ने लंबे समय तक शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक सेवा और स्थानीय संपर्क के माध्यम से जनजातीय समाज में विश्वास अर्जित किया, तो चुनाव में उसे लाभ मिला। यह लाभ केवल धार्मिक कारणों से नहीं, बल्कि सामाजिक उपस्थिति के कारण भी था।

5. पाँचवाँ कारक क्षेत्रीय और धार्मिक विविधता थी। उत्तर-पूर्व के कई जनजातीय क्षेत्रों में ईसाई पहचान और स्थानीय जातीय-क्षेत्रीय प्रश्न अधिक प्रभावशाली थे। मध्य भारत के कुछ क्षेत्रों में हिंदू सांस्कृतिक संपर्क अधिक मजबूत था। अतः पूरे भारत के जनजातीय समाज के लिए एक समान निष्कर्ष निकालना उचित नहीं है।

9. समालोचनात्मक विश्लेषण

जनजातीय समाज में श्री राम के प्रति आस्था और 2014 के लोकसभा चुनाव के बीच संबंध का समालोचनात्मक अध्ययन करते समय दो अतियों से बचना आवश्यक है। पहली अति यह है कि इस प्रभाव को पूर्णतः नकार दिया जाए और माना जाए कि जनजातीय समाज का मतदान केवल आर्थिक या स्थानीय मुद्दों पर आधारित था। दूसरी अति यह है कि चुनावी परिणामों को लगभग पूरी तरह धार्मिक आस्था का परिणाम मान लिया जाए। वास्तविकता इन दोनों के बीच स्थित है।

श्री राम के प्रति आस्था ने जनजातीय समाज में सांस्कृतिक एकीकरण और प्रतीकात्मक निकटता का माध्यम प्रदान किया। शबरी, निषादराज, वनवास और वनवासी सहयोग के प्रसंगों ने यह भाव उत्पन्न किया कि रामकथा में जनजातीय समाज का भी सम्मानजनक स्थान है। इस भाव का राजनीतिक उपयोग हुआ, और कुछ दलों ने इसे सांस्कृतिक एकता तथा हिंदू पहचान के संदेश के रूप में सामने रखा।

यह भी स्पष्ट है कि 2014 का चुनाव एक ऐसे समय में हुआ जब भाजपा अपने पारंपरिक सामाजिक आधार से आगे बढ़ना चाहती थी। जनजातीय समाज तक पहुँचने के लिए केवल विकास का वादा पर्याप्त नहीं था; सांस्कृतिक स्वीकार्यता और भावनात्मक संपर्क भी आवश्यक था। श्री राम का प्रतीक इस दिशा में उपयोगी साबित हुआ। इसने भाजपा को कुछ क्षेत्रों में वैचारिक और सांस्कृतिक प्रवेशद्वार उपलब्ध कराया।

किन्तु यह प्रभाव प्रत्यक्ष, एकमात्र और सर्वव्यापी नहीं था। जनजातीय मतदाता का निर्णय स्थानीय समस्याओं, कल्याणकारी अपेक्षाओं, क्षेत्रीय नेतृत्व, संगठनात्मक विश्वास और राष्ट्रीय नेतृत्व की धारणा से भी निर्मित हुआ। इसलिए यह कहना अधिक उचित होगा कि श्री राम के प्रति आस्था ने 2014 के चुनाव में जनजातीय मतदान को प्रभावित करने वाली एक सहायक सांस्कृतिक-राजनीतिक पृष्ठभूमि तैयार की, न कि अकेले चुनावी परिणाम निर्धारित किए। यह विश्लेषण भारतीय राजनीति के एक व्यापक सत्य की ओर भी संकेत करता है: सांस्कृतिक प्रतीक तब अधिक प्रभावी होते हैं जब वे सामाजिक वास्तविकताओं, राजनीतिक संगठन और विकास की आकांक्षाओं से जुड़ जाते हैं। श्री राम का प्रतीक जनजातीय समाज में इसलिए प्रभावी हो सकता है क्योंकि वह केवल धार्मिक छवि नहीं, बल्कि साझा सांस्कृतिक गौरव, सम्मान और जुड़ाव की भावना से जुड़ता है।

10. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि भारत के जनजातीय समाज में श्री राम के प्रति आस्था ने 2014 के लोकसभा चुनाव में एक महत्त्वपूर्ण किंतु सीमित और अप्रत्यक्ष भूमिका निभाई। यह भूमिका मुख्यतः सांस्कृतिक पहचान के निर्माण, राजनीतिक स्वीकार्यता के विस्तार और जनजातीय समाज को व्यापक हिंदू प्रतीकात्मक ढाँचे से जोड़ने के रूप में दिखाई देती है। शबरी, निषादराज और वनवास से जुड़े प्रसंगों ने श्री राम को जनजातीय समाज के लिए निकट और आत्मीय प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करने में सहायता की। 2014 के चुनावी परिप्रेक्ष्य में इस सांस्कृतिक निकटता ने कुछ क्षेत्रों में राजनीतिक लामबंदी को वैचारिक आधार दिया और भाजपा जैसे दलों के जनजातीय विस्तार में सहायक भूमिका निभाई। फिर भी यह प्रभाव अकेला निर्णायक नहीं था। विकास, सशक्त नेतृत्व, भ्रष्टाचार-विरोध,

स्थानीय मुद्दे, संगठनात्मक कार्य और क्षेत्रीय राजनीति जैसी अनेक शक्तियाँ समानांतर रूप से कार्य कर रही थीं। अतः चुनावी परिणामों को केवल धार्मिक आस्था की दृष्टि से समझना अधूरा होगा। समग्र रूप से कहा जा सकता है कि जनजातीय समाज में श्री राम के प्रति आस्था सांस्कृतिक और राजनीतिक संदेश के बीच एक पुल के रूप में कार्य करती है। 2014 में यह पुल चुनावी व्यवहार को प्रभावित करने वाली पृष्ठभूमि बना, यद्यपि मुख्य निर्धारक अन्य कारकों के साथ मिलकर ही सामने आए। भविष्य में जैसे-जैसे सांस्कृतिक राजनीति और जनजातीय संपर्क की प्रक्रियाएँ आगे बढ़ेंगी, यह विषय और अधिक महत्त्वपूर्ण होता जाएगा। इसलिए भारतीय चुनावी राजनीति और जनजातीय अध्ययन के गंभीर शोध में इस प्रश्न का स्थान केंद्रीय माना जाना चाहिए।

संदर्भ सूची

1. *The Wire*. (n.d.). *Tribal outreach and Ram temple politics*.
2. *India Today*. (2014). *BJP and Ram temple stance in 2014*.
3. *The Indian Express*. (n.d.). *Tribal voting patterns in Assam*.
4. *Hindustan Times*. (n.d.). *Religion vs welfare in elections*.
5. *The Economic Times*. (n.d.). *Election issues and Ram temple debate*.
6. Xaxa, V. (2008). *State, society, and tribes: Issues in post-colonial India*. Pearson Longman.
7. Béteille, A. (1998). *The idea of indigenous people*. Oxford University Press.
8. Jaffrelot, C. (2010). *Religion, caste and politics in India*. Permanent Black.
9. Shah, G. (2004). *Social movements in India: A review of literature*. Sage Publications.
10. Guha, R. (1999). *Savaging the civilized: Verrier Elwin, his tribals, and India*. Oxford University Press.